वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 35
ISBN 978-93-80353-57-9

श्री शान्तिनाथ पूजा विधान (हिन्दी)

(ब्र. शान्तिदास विरचित संस्कृत का)
हिन्दी पद्यानुवाद

–रचयित्री–

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत दिव्यशक्ति चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आयोजित श्री शान्तिनाथ भगवान के जन्म, तप, मोक्षकल्याणक ज्येष्ठ वदी चौदस (4 जून 2016) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Website : www.jambudweep.org , www.encyclopediaofjainism.com
Facebook : divyashaktigyanmatimataji

चौदहवाँ संस्करण 2200 प्रतियाँ | वीर नि. सं. 2542 ज्येष्ठ वदी चौदस, 4 जून 2016 | मूल्य 20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-
जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण –1979 (1100 प्रतियाँ)	अष्टम संस्करण –2005 (2200 प्रतियाँ)
द्वितीय संस्करण –1982 (3300 प्रतियाँ)	नवम् संस्करण –2007 (2200 प्रतियाँ)
तृतीय संस्करण –1991 (2200 प्रतियाँ)	दशम संस्करण –2008 (2200 प्रतियाँ)
चतुर्थ संस्करण –1994 (2200 प्रतियाँ)	ग्यारहवाँ संस्करण–2010 (2200 प्रतियाँ)
पंचम संस्करण –1996 (2200 प्रतियाँ)	बारहवाँ संस्करण–2016 (2200 प्रतियाँ)
षष्ठ संस्करण –1998 (2200 प्रतियाँ)	तेरहवाँ संस्करण–2016 (2200 प्रतियाँ)
सप्तम संस्करण –2003 (1100 प्रतियाँ)	

कम्पोजिंग– **ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी के द्वारा देश, समाज एवं प्राचीन तीर्थों के वैभव का ज्ञान होता है जब इस धरती पर मनुष्यों की बुद्धि अति तीक्ष्ण थी, एक बार सुनने मात्र से उन्हें जो ज्ञान प्राप्त हो जाता था उसे वे कभी भूलते नहीं थे तब साहित्य लेखन की परम्परा नहीं थी किन्तु जब हमारे ऋषि-मुनियों ने देखा कि अब मानव-स्मृति क्षीण हो रही है तब केवल- ज्ञानियों की वाणी को शास्त्रों में संजोना-लिखना प्रारंभ किया गया।

लेखन परम्परा में सबसे पहले आचार्य गुणधरस्वामी ने कषायप्राभृत- ग्रंथ एवं पुष्पदंत-भूतबली आचार्यों ने षट्खण्डागम ग्रंथ रचा उसके पश्चात् तो आचार्य यतिवृषभ, कुन्दकुन्ददेव, अकलंकदेव, पूज्यपाद, समंतभद्र आदि अनेक आचार्यों ने अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ लिखे जो कि मंदिरों में, शास्त्र भण्डारों में आज भी प्राप्त होते हैं।

बीसवीं शताब्दी में पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में एक अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। पूज्य माताजी बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज की शिष्या हैं जिन्होंने उन्हें 'ज्ञानमती' नाम से अलंकृत कर जैन समाज को आर्यिका रूप में एक अनमोल निधि प्रदान की है।

आर्यिका श्री द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र, तीन-लोक आदि बड़े-बड़े विधानों से देश भर का जैन समाज सुपरिचित है। पूज्य माताजी ने छोटे-बड़े सभी विधानों को मिलाकर लगभग 36 से भी अधिक विधान रच दिये हैं। भगवान शांतिनाथ आप सभी की शांति के लिए मंगल करें यही मंगलकामना है। जिस विधान का वर्णन साक्षात् बृहस्पति भी स्पष्टतया करने में समर्थ नहीं हैं, भला उन शांतिनाथ की पूजा का माहात्म्य कौन कह सकता है? अर्थात् इस विधान का महत्व वचनों से नहीं कहा जा सकता है इसकी महिमा अपरम्पार है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भक्तिमार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यस्वरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान् बन सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पापपुंजों को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साधन गृहस्थ के षट्कर्म का पालन करना उसके लिए आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमण्डल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं। इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिकादि पर्वों में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

सन् 1976 में रचित इन्द्रध्वज मण्डल विधान देश के कोने-कोने में अपनी सुरभि को फैला रहा है। इसका श्रेय परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की साहित्यिक लेखनी को है। जो भी व्यक्ति जिस आशा को लेकर इस महामण्डल विधान को करते हैं निश्चित ही उस मनोवांछित कार्य की सिद्धि करते हैं। आज भौतिक चकाचौंध में फंसा हुआ प्राणी इसके लिए इच्छुक रहता है कि कुछ क्षण आत्मशांति मिले और क्षणिक शांति की प्राप्ति के लिए यह मिथ्यात्व की शरण ले लेता है चूंकि सज्ज्ञान-आत्मज्ञान से विहीन होता है लेकिन जब सद्गुरुओं का समागम प्राप्त होता है जो आत्मशांति के लिए इन्द्रध्वज आदि महाविधानों को करके अपूर्व शांति का अनुभव करता है और साथ ही इच्छित कार्य की सिद्धि भी। आगमोक्त विधि से किया गया छोटा-सा विधान भी विशेष चमत्कारिक फल को प्राप्त करने वाला होता है।

इन्द्रध्वज विधान जैसी सरल रचना को सम्पन्न करके, देखकर व सुनकर भावविभोर हुए कितने ही गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्य माताजी के सामने ऋषिमंडल आदि विधान बनाने का आग्रह किया। भक्तगणों के आग्रह को स्वीकार करके माताजी ने तीस-चौबीसी विधान, ऋषिमंडल विधान, पंचपरमेष्ठी विधान, जिनगुण सम्पत्ति विधान आदि अनेक विधानों की भी रचना की, जो क्रमशः छप चुके हैं।

'शान्तिनाथ मण्डल विधान' के भी नौ संस्करण छप चुके हैं। यह दशवाँ संस्करण आपके हाथों में आ रहा है। पूज्य माताजी ने जनसाधारण की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर अति सरस मधुर भाषा में इस शांति विधान की रचना की है। मैं समझती हूँ इस लालित्य एवं सौष्ठव से परिपूर्ण ''शांति विधान'' को कृत-कारित-अनुमोदनापूर्वक करने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व शांति प्राप्त करेंगे।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में

ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर ''आचार्य श्री शांतिसागर धाम'' का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

नवदेवता पूजन

—गीता छन्द—

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहां मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूं मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।नव०।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।नव.।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु, पूजहूँ नत भाल मैं।।नव.।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक, लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।नव.।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।नव.।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनुपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।नव.।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।नव.।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः। (९, २७ या १०८बार)

जयमाला

सोरठा- **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।

ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूं।।७।।

दोहा— **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते।।९।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री शांतिनाथ पूजा विधान

(ब्र. शांतिदास विरचित संस्कृत का भाषा अनुवाद)

-मंगलाचरण-

अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु जैनाम्नाय के ये पाँच परमेष्ठी होते हैं। अखिल-चतुर्विध संघ के लिए ये मंगल, लोकोत्तम और शरणभूत होने से महान् अभ्युदय को करने वाले हैं।।१।।

प्रथम ही जिनेन्द्रदेव मंगलकार होवें, पुनः उनके द्वारा कथित आगम और योगियों का समूह मंगलकर होवे और जिनधर्म भी सर्व तरफ से मंगलमय होवे।।२।।

जम्बूद्वीप, धातकीखंडद्वीप, पुष्करार्धद्वीप ये तीनों क्षेत्र अर्थात् ढाई द्वीप हैं। इनमें होने वाले तीर्थंकर, चन्द्र सदृश श्वेतवर्ण वाले, लाल कमल सदृश लाल वर्ण वाले, मयूर कंठ सदृश नीले वर्ण वाले, स्वर्ण वर्ण वाले और वर्षा ऋतु के मेघ के सदृश अर्थात् कृष्ण वर्ण वाले ऐसे पांचों वर्ण वाले होते हैं। ये सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र लक्षण रत्नत्रय के धारी, आठ कर्मरूपी ईंधन को भस्म करने वाले हैं। भूत, भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों काल में हुए उन तीर्थंकरों को मैं नमस्कार करता हूँ।।३।।

अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, शांतिनाथ विधान के लिए मैं आज इन पाँचों परमेष्ठी को प्रणाम करता हूँ।।४।।

सर्व विघ्न को नष्ट करने वाली और समस्त प्राणियों को भी नित्य अभय दान देने वाली ऐसी शारदा माता को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।।५।।

इस लोक में हुए सर्व गणधरों को और कुन्दकुन्द आदि सभी मुनियों को मैं इस पूजा विधान रचना की सिद्धि हेतु मन, वचन, काय की शुद्धिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।।६।।

जिस विधान का वर्णन साक्षात् बृहस्पति भी स्पष्टतया करने में समर्थ नहीं हैं, भला इस शांतिनाथ की पूजा का माहात्म्य कौन कह सकता है? अर्थात् इस विधान का महत्व वचनों से नहीं कहा जा सकता है।।७।।

अथ शांतिनाथ विधान का कथामुख (पीठिका)

इस शांतिनाथ विधान को किसने कब किया? और इसका क्या फल मिला? उसको मैं कहता हूं, सो यह मेरी बाल चेष्टा ही है।।८।।

मथुरा प्रान्त में सूर्यवंशी राजा हुआ, जिसके अन्यायी होने से प्रजा भी अन्याय करने वाली हो गई।।९।।

तब उस ग्राम के रक्षक देव ने रुष्ट होकर दारुण उपसर्ग प्रारंभ किया, उसने उस समय नाना रोगों से राजा को सम्पूर्ण प्रजा को भी व्याकुल कर दिया।।१०।।

उस किन्नर ने उस नगर में ऐसा अधिक उपद्रव किया कि वह नगर प्रजाजनों से रहित शून्य जैसा हो गया।।११।।

एक समय वर्षाकाल में 'सुमति' नाम का एक व्यापारी आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को वहां की स्थिति को न जानता हुआ अकस्मात् आ गया।।१२।।

मेघ वर्षा को देखकर वह व्यापारी नगर में प्रवेश करके वहीं एक शून्य मकान में ठहर गया।।१३।।

वहाँ पर उपद्रव के निमित्त से विकल हो उठा तब उसने राजा के समीप पहुँचकर सारी बातें निवेदित कर दीं।।१४।।

पुनः चैत्यालय में जाकर आदर सहित अर्हंत की पूजा की और वहाँ पर उसने चारण ऋद्धिधारी दो मुनियों के दर्शन किये।।१५।।

उन्हें नमस्कार करके सामने बैठकर विनय से पूछता है कि हे प्रभो! किस उपाय से यह उपद्रव शान्त हो सकता है सो आप कृपा करके बताइये? ।।१६।।

वैश्य के ऐसे वचन सुनकर बड़े मुनिराज ने कहा कि हे महाभाग! इस अवसर पर शांतिनाथ का पूजा विधान करना चाहिए।।१७।।

मंत्रोद्धार

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शान्तिनाथाय सकलविघ्नहराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (अमुकस्य)[१] सर्वोपद्रवशांतिं लक्ष्मीलाभं च कुरु कुरु नमः स्वाहाः।

यह शांतिविधान का 'मंत्रराज' है, सम्यक् प्रकार एकाग्रचित होकर जपने से जपने वाले को शान्तिदायक और लक्ष्मी प्रदान करने वाला है।।१८।।

हे भद्र! अब मैं इस विधान की और मंत्र साधन की विधि कहता हूँ सो सुनो, जिससे कि सभी विघ्न नष्ट हो जावेंगे और सर्व सम्प्रदाएं प्राप्त होंगी।।१९।।

जब शुक्ल पक्ष सोलह दिन का हो तब शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ कर पूर्णिमा तक यह विधान करे तथा प्रतिदिन उपर्युक्त मंत्र का एक हजार जाप करते हुए विधि पूर्ण करे अर्थात् अन्त में दशांश आहुति रूप हवन विधि करके यह विधान सम्पन्न करे।।२०।।

पहले यंत्र की पूजा करे पुनः दीपक और धूप को रखकर उतने ही सुगन्धित पुष्पों से मंत्र का जाप करें।।२१।।

झल्लरी यंत्रोद्धार

कांसे की दो झल्लरी लाकर उसके पृष्ठ भाग पर यंत्र बनावे। यंत्र बनाने की विधि यह है-पहले आठ दल का एक कमल बनावे, उनके बीच में 'अर्हंत' लिखें ऊपर में सिद्धों को, उत्तर की तरफ आचार्यों को, पूर्व की तरफ उपाध्याय को और बाईं तरफ साधु पद को लिखें, इस प्रकार से दिशाओं के दलों को पूर्ण करें। पुनः आग्नेय कोण से प्रारंभ करके ईशान कोण तक क्रम से 'एसो पंच णमोयारो' इत्यादि के चार पद लिखें-२२, २३, २४।।

अनन्तर पूर्वोक्त शान्ति मंत्र से इस यंत्र को चारों तरफ से वेष्टि कर देवें। आचार्य सुवर्ण की शलाका (कलम) से शुद्ध केशर से यह यंत्र बनावे।।२५।।

१. जिसके लिए करना हो उसका नाम लेवे, यदि अपने लिए हो तो ''मम'' कहे।

पुनः इस यंत्र को ऊँचे स्थान पर स्थापित कर सामने दर्पण रखे कि जिसमें इस यंत्र का प्रतिबिंब पड़ता रहे। उस दर्पण में जो यंत्र का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है उसका विधिवत् अभिषेक करे।।२६।।

पूजा विधान के पूर्व और पश्चात् भी जिनालय के ऊपर स्थान में जाकर 'शान्तिभक्ति' का पाठ पढ़ते हुए झल्लरी मुख का ताड़न करना चाहिए अर्थात् इस कांसे की झल्लरी को बजाना चाहिए।।२७।।

इस झल्लरी की ध्वनि जितने देश तक-जितनी दूर तक पहुँचती हैं उतने स्थान तक विघ्नों का नाश हो जाता है पुनः जो मंत्र की साधना करते हैं उसके फल का क्या कहना? अर्थात् विधिवत् मंत्र जपने का फल तो अचिन्त्य है ही इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।।२८।।

इस विधान को कराने वाला आचार्य विधि विधान को जानने वाला, जितेन्द्रिय और प्रश्नों को सहन करने वाला हो तथा यजमान-पूजा करने वाला श्रावक श्रद्धावान हो, धीर हो और पूजन करने का उत्सुक हो।।२९।। वह अपनी धर्मपत्नी सहित अभिषेक और पूजा की सामग्री को अपने हाथ में लेकर ईर्यापथ शुद्धि से मंदिर में जावे।।३०।।

प्रसन्नचित्त वह श्रावक शुभ दिन में अर्हंतदेव के मंदिर में प्रवेश करके जिनेन्द्रदेव की पूजनविधि सम्पन्न करे पुनः गृहस्थाचार्य के निकट पहुँच कर उनसे प्रार्थना करे।।३१।।

हे महापुरुष! मैं जिनयज्ञविधान करना चाहता हूँ और आप विधिविधान के जानकार हैं अतः आप मेरे प्रमाण हैं ऐसा मुझे विश्वास है।।३२।।

इतना सुनकर वह आचार्य कहे कि हे भव्य! आपका यह विचार प्रशंसनीय है जो कि आपने यह जिनयज्ञ विधान करना चाहा है।।३३।।

तुम्हें इस विधान में ब्रह्मचर्य ग्रहण करना है, एकाशन करना है और कठोर वचनों का त्याग करके कलुषता को छोड़ना है।।३४।।

सभी प्राणियों में सौहार्द भाव एवं उदारता को धारण करना है ऐसा कहकर वो आचार्य उस बुद्धिमान के ललाट में तिलक लगावे।।३५।।

पुनः वह वहाँ से आकर विधानाचार्य के आदेश से मनोहर मंडप का निर्माण कराकर उसमें चौकौन वेदी बनावे।।३६।। उस पर मंडल को पूरे, उसके चारों तरफ चार प्राकार बनावे। पुनः पहले वलय में आठ कोठे, उसके आगे दूने-सोलह कोठे, पुनः दूने-बत्तीस कोठे, पुनः दूने-चौसठ कोठे बनावे।।३७।।

जिनेन्द्रदेव की, शास्त्र की और गुरु की भी विधिवत् अर्चा करके पुष्पांजलि क्षेपण करे।।३८।।

प्रथम ही गुरु की आज्ञा लेकर पूजा प्रारंभ करे। उसमें पहले सहस्रनाम की पूजा सकलीकरण करे।।३९।।

पश्चात् हे नृपः! शांतिनाथ की प्रतिमा की स्थापना के लिए श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की पूजा आदि करके मण्डप की शुद्धि करें।।४०।।

वाद्यों की ध्वनि करते हुए बीच में शांतिनाथ भगवान् की मूर्ति को विराजमान करके शान्ति भक्ति का पाठ करके नीर, गन्ध, अक्षत आदि आठ द्रव्यों से पूजा करते हुए विधिवत् शान्ति मंत्र का जाप करें, अनन्तर पुण्याहवाचन करे।।४१।।

पूजाविधान के अन्त में वहां पर आये हुए मनुष्यों को यथाशक्ति दान देवे, उनका सम्मान आदि करके उन्हें संतुष्ट करे।।४२।।

अथ शान्तिविधान पूजा प्रारंभ

-स्थापना-शंभु छंद-

हे शान्तिनाथ! आवो! आवो!, सब विघ्नों का परिहार करो।
इस मंडल पर ठहरो ठहरो, मेरे सन्निध ही वास करो।।
तुम नाम शांति भी शांतीप्रद, तुम धर्म भुवन में शान्ति करे।
हे नाथ! अतः तुम आश्रय ले, कर जन्म सफल आह्वान करें।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे पंचमचक्रेश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे द्वादशकामदेवेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद (शरणभूत) हे षोडशोत्तम तीर्थंकर! अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)।

शांतिभक्ति

शार्दूलविक्रीड़ित छंद

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् !, पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः, संसारघोरार्णवः।।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्ण-भूमंडलो।
ग्रैश्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः।।१।।

(भाषा-चाल-मेरी भावना)

भगवन्। सब जन तव पद युग की, शरण प्रेम से नहिं आते।
उसमें हेतु विविध दुःखों से, भरित घोर भववारिधि है।।
अति स्फुरित उग्र किरणों से, व्याप्त किया भूमंडल है।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता, इन्दुकिरण छाया जल में।।१।।

क्रुद्धाशीर्विषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्रमो।
विद्याभैषजमन्त्रतोयहवनै-र्याति प्रशांतिं यथा।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम् ।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो! विस्मयः।।२।।

कुद्धसर्प आशीविष डसने, से विषाग्नि युत मानव जो।
विद्या औषध मंत्रित जल, हवनादिक से विष शांति हो।।
वैसे तव चरणाम्बुज युग, स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र, अति शान्त हुए आश्चर्य अहो।।२।।

संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधर, श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते!
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं।।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत, व्याघातनिष्कासिता।
नानादेहि विलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी।।३।।

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की, शोभा से अधिक कान्ति युत देव!
तव पद प्रणमन करते जो, पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव।।
उदित रवी की स्फुट किरणों से, ताड़ित हो झट निकल भगे।।
जैसे नाना प्राणी लोचन, द्युतिहर रात्रि शीघ्र भगे।।३।।

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यन्तरौद्रात्मकान्-
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानला-
न्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल-स्तुत्यापगावारणम्।।४।।

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन, अति रौद्रात्मक मृत्युराज!
भव भव में संसारी जन के, सन्मुख धावे अति विकराल।।
किस विध कौन बचे जन इससे, काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति, नदी बुझावे नहीं उसे।।४।।

लोकालोक निरन्तरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते! विभो!
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर - श्वेतातपत्रत्रय!।।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः।।५।।

लोकालोक निरन्तर व्यापी, ज्ञानमूर्तिमय शान्ति विभो।
नाना रत्न जटित दण्डे युत, रुचिर श्वेत छत्रत्रय है।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव, से झट रोग पलायित हैं।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन, सुन वन हस्ती भगते हैं।।५।।

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम विपुलश्रीमेरु चूड़ामणे!
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर! प्राणीष्टभामंडल!।।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल-स्तुत्यैव संप्राप्यते।।६।।

दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला, श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर, द्युतिहर सबको इष्ट अति।।
अव्याबाध अचिंत्य अतुल, अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति, से ही हो वह प्राप्त निधान।।६।।

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्री भास्करो भासयं-
स्तावद् धारयतीह पंकजवंन, निद्रातिभारश्रमम् ।।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न, स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत् ।।७।।

किरण प्रभायुत भास्कर भासित, करता उदित न हो जब तक।
पंकज वन नहिं खिलते निद्रा, भार धारते हैं तब तक।।
भगवन् ! तव चरणद्वय का हो, नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके, महत् पाप धारें तब तक।।७।।

शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र! शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
सम्प्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः, शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।।
कारुण्यान्ममभाक्तिकस्यचविभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः, शान्त्यष्टकं भक्तितः।।८।।

शान्ति जिनेश्वर! शान्तचित्त से, शान्त्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले, शान्त हुए हैं पृथिवी पर।।
तव पदयुग की शान्त्यष्टकयुत, स्तुति करते भक्ति से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न, करो भगवन्! करुणा करके।।८।।

–गीता छंद–

जो मन वचन तन शुद्धि युत, तीनों समय में भक्ति से।
इस शांति अष्टक को पढ़े, क्या फल मिलेगा फिर उसे।।
इच्छा हुई यदि जानने की, तो सुनो हे भव्यजन!।
श्री पूज्यपाद मुनीन्द्र से, बस पूछ लीजे सर्वजन।।९।।

–अथ अष्टक–शंभु छंद–

जो स्वर्णकलश में जल ले नित, जिनपद में धारा करते हैं।
वे निश्चित ही साम्राज्य पाय, राज्याभिषेक को लभते हैं।।
फिर त्रिभुवन के स्वामी बनकर, वे स्वात्म सुधारस चखते हैं।
इस हेतु हम शांतीश्वर के, पद में जलधारा करते हैं।।१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कर्पूर सुचंदन ले, जो जिनपद कमल चर्चते हैं।
वे जग में सुरभित तनु पाते, सुरललनाओं सह रमते हैं।।
भव भव संताप मिटा करके, फिर मुक्तिवल्लभा वरते हैं।
इस हेतू हम चंदन लेकर, जिनपद में लेपन करते हैं।।२।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सुरभि अखंडित शालिपुंज, जिनपदपंकज ढिग धरते हैं।
वे नीरोगी दीर्घायु हों, तनु कामदेव सम लभते हैं।।
फिर तनु विरहित अक्षय अनुपम, गुणरत्नाकर बन जाते हैं।
इस हेतू हम जिनचरण निकट, अक्षत के पुंज चढ़ाते हैं।।३।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वकुल मालती लालकमल, सितकमल सुगंधित पुष्पों से।
जिन चरणकमल अर्चें वे सुर, विमान पुष्पोत्तर पा लेते।।
फिर सुरगणपूजा योग्य सिद्ध, पद पाकर शाश्वत सुख लभते।
इस हेतू हम नित पुष्पों को, जिन चरणों में अर्पण करते।।४।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वर्णपात्र में सितशाली, ओदन घृतपय गुड़ युत चरु ले।
जिन निकट चढ़ाते उन्हें स्वास्थ्य, धन धान्य आदि बहुभोग मिलें।।
फिर समतारस को पी करके, परमानंदामृत लभते हैं।
इस हेतू हम बहु व्यंजन ले, जिन सम्मुख अर्पण करते हैं।।५।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर जला दीपक लेकर, जिनवर की आरति करते हैं।
वे दीप्यमान मणिकिरणों के, महलों में सुख से रहते हैं।।
फिर तीन भुवन के चूड़ामणि, निज मोक्ष महल में बसते हैं।
इस हेतू हम दीपक लेकर, शांतीश्वर को नित यजते हैं।।६।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालगुरु मिश्रित सुरभि धूप, धूपायन में जो खेते हैं।
मनसिज[१] सम सुन्दर रूप धरें, सौभाग्यवान वे होते हैं।।

१. कामदेव।

फिर निज अनंतगुण सौरभ से, तीनों जग को सुरभित करते।
इस हेतू अग्नि में धूप जला, हम भी तुम पद पूजन करते।।७।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला नारंग पनस[1], जंबीर आम बहु फल लाके।
जो शांतिनाथ के चरण जजें, वे वांछित फल बहु विध पाते।।
पुनरपि सर्वोत्तम शिवफल पा, सबको वांछित फल देते हैं।
इस हेतू हम उत्तम फल ले, जिनपद में अर्पण करते हैं।।८।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक वसु[2] द्रव्य लिये, जो जिनवर की अर्चा करते।
उनके सब विघ्न विनश जाते, सब तरफ सभी ईप्सित[3] फलते।।
फिर वे अनर्घ्य पद पाकर के, निज में ही नित रमते रहते।
इस हेतू हम भी अर्घ्य चढ़ा, तुम पद भक्ती में रत रहते।।९।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनसमर्थाय ह्रीं शांतिनाथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

१. कटहल, २. आठ, ३.मनवाञ्छित।

अथ स्तवन

-शंभु-छंद-

ॐकार ज्ञानमय ह्रीं मध्य, राजे जो जिनवर उन्हें नमूँ।
त्रसस्थावर करुणाधारी,जो एक अनेक मय उन्हें नमूँ।।
लक्ष्मीभर्ता चक्रीपति हैं, जो शांतिरूप मैं उन्हें नमूँ।
जो ज्ञानगर्भ में रहते हैं, नानाभाषात्मक उन्हें नमूँ।।१।।

वाञ्छाविहीन जो स्वयं, पवित्रात्मा कहलाते उन्हें नमूँ।
सब अष्ट कर्म को शांत किया, औ तीर्थ चलाया उन्हें नमूँ।।
कल्पनारहित सौंदर्यवान्, रामाविरहित मैं उन्हें नमूँ।
यति के चारित में दक्ष सदा, सर्वात्म स्वात्म मय उन्हें नमूँ।।२।।

जो रत्नत्रय से युक्त ज्ञान से, व्याप्त रूप हैं उन्हें नमूँ।
परभव में सर्व सौख्यदाता, करुणा के धाता उन्हें नमूँ।।
जिनके वच विश्व हितंकर हैं, उन शांतिनाथ को नित्य नमूँ।
संपूर्ण विषों के अपहर्ता, कुरुवंशशिरोमणि उन्हें नमूँ।।३।।

ऋषियों का मन हर्षित करते, कुल क्रमधर कुलकर उन्हें नमूँ।
अद्भुतसुरूपधर ''ह्रीं'' बीज के, वासी उनको नित्य नमूँ।।
मेरूपर्वत समधीर नाथ!, मुझ विघ्न विनाशक तुम्हें नमूँ।
स्वामी संज्ञा से नित शोभित, भयहर्ता तुमको नमूँ नमूँ।।४।।

दोहा—**शांत्यष्टक यह कण्ठ में, धारे हार समान।**
उनके घर संपत्ति नित, विपति कदापि न जान।।५।।

इति प्रथम वलयाष्टकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
हं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं।।१।।

–नरेन्द्र छंद–

'हं' आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
तरु अशोक सत् प्रातिहार्य युत, अतिशय गुण से मंडित।।
इनसे युत श्री शांतिनाथ को, पूजूँ मन वच तन से।
सर्व उपद्रव शांत करो मुझ, मिले सर्वसुख जिससे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डिताय अशोकतरुशोभन–पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
भं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।२।।

भं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
सुरकृत पुष्पवृष्टि अतिशययुत, प्रातिहार्य से मंडित।।
इनसे युत श्रीशांतिनाथ को, पूजूँ मन वच तन से।
सर्व उपद्रव शांत करो मुझ, मिले सर्वसुख जिससे।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमंडिताय सुरपुष्पवृष्टिशोभन–पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
मं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।३।।

मं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य है, इस अतिशय से मंडित।।
इनसे युत श्री शांतिनाथ को, पूजूं मन वच तन से।
सर्व उपद्रव शांख्त करो मुझ, मिले सर्वसुख जिससे।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दिव्यध्वनिशोभन–पदप्रदाय म्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
रं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।४।।

रं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
चामर प्रातिहार्य औ अतिशय, गुण समूह से मंडित।।
इनसे युत श्री शांतिनाथ को......।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्यमंडिताय चामरोज्ज्वल शोभन–पदप्रदाय र्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
घं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।५।।

घं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
सिंहासन सत्प्रातिहार्य युत, अतिशय गुण से मंडित।।
इनसे युत श्रीशांतिनाथ को......।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय सिंहासनप्रातिहार्य शोभन–पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
झं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।६।।

झं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
भामंडल सत् प्रातिहार्य युत, अतिशय गुण से मंडित।।
इनसे युत श्री शांतिनाथ को.....।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय भामंडलसत्प्रातिहार्यमंडिताय भामंडलसत्प्रातिहार्यशोभन–पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्य्रूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
सं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।७।।

सं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
देवदुंदुभी प्रातिहार्य युत, अतिशय गुण से मंडित।।
इनसे युत श्रीशांतिनाथ को......।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय दुंदुभिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दुंदुभिप्रातिहार्य शोभन-पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विंदु षट्स्वरं।
खं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शांतिनाथं महाम्यहं।।८।।

खं आदिक बीजाक्षर माने, षट्स्वर विंदु समन्वित।
छत्रत्रयसत्प्रातिहार्ययुत, अतिशय गुण से मंडित।।
इनसे युत श्रीशांतिनाथ को......।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय छत्रत्रयशोभनपदप्रदाय सर्वविघ्नहराय ख्म्ल्व्र्यूंबीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हभमरघझसखान्, बीजवर्णान् विधानतः।
प्रलयं यांतु विघ्नौघाः स्तोत्रेणार्घ्येण संयजे।।९।।

ह भ मर घ झ सख बीजवर्ण, ये विधिवत् पूजें जावें।
सर्वविघ्न निर्मूल नाश हों, भविजन सब सुख पावें।।
संस्तुति वंदन नमस्कार कर, पूरण अर्घ चढ़ावें।
शांतिनाथ पूजा प्रसाद से, सब दुःख शोक नशावें।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय प्रातिहार्यअष्टसहिताय बीजाष्टमंडनमंडिताय सर्वविघ्नशांतिकराय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

अथ द्वितीयवलयषोडशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

-नरेन्द्र छंद-

शत इंद्रों से योगि वृंद से, वंदित पद पंकज हैं।
शाश्वत ज्ञान दरश सुख बीरज, धारी रवि अद्भुत हैं।।
शुक्लध्यान से घातिकर्म, वैरी को दग्ध किया है।
ऐसे श्रीअर्हंतदेव का, अर्चन नित्य किया है।।१।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत ऐरावत विदेहादि शतैकसप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूतभविष्यत्वर्तमानअर्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेत अमलतरखण्ड उज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म को नाश, आठ उज्ज्वल सद्गुण के धारी।
दुष्टभाव दुखदाह विनाशक, मिष्ट मधुर सुखकारी।।
केवलदर्शन से अवलोकित, सब जग तुलना विरहित।
कृत्यकृत्य उन सर्व सिद्ध को, पूजूँ स्तवन करूँ नित।।२।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतऐरावत विदेह आदि शतैकसप्तति क्षेत्रआर्यखण्डे भूतभाविवर्तमानसिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेत अमलतरखण्ड उज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं......।

जो स्वयमेव श्रेष्ठ, पंचाचारों का पालन करते।
अनुग्रहमति से आश्रितजन को, नित पलवाते रहते।।
काम मल्लमद मर्दन करते, उज्ज्वल गुण को धरते।
शरणभूत सुखप्रद उन, सूरीगण को हम नित यजते।।३।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशहेतवे भरत ऐरावतविदेहआदि शतैकसप्तति क्षेत्रार्यखण्डे भूतभाविवर्तमानआचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखण्ड उज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह अंग व अंगबाह्य, श्रुत जलधि पार पहुँचे जो।
परवादी पर्वत के लिए, वज्रसम वचन धरें जो।।

सादि अनादि अनंत सांत, मोक्षमार्ग उपदेशें।
गुण जलनिधि उन उपाध्याय को, आदर से नित पूजें।।४।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत ऐरावतविदेहादि शतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूतभाविवर्तमानपाठकपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्तिउपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष हेतु जो धर्म शुक्ल दो, ध्यान उन्हें नित ध्याते।
पंचेन्द्रिय का रोधन करते, शांत दांत कहलाते।।
अक्षयमुक्तिरमा उनको नित, सत्कटाक्ष से देखे।
ऐसे साधु समूह उन्हें मैं, जजूँ सिद्धि सब देते।।५।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरत ऐरावतविदेहादि शतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूतभाविवर्तमानसर्वसाधुपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्ति उपेतामलतरखण्डोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंका आदि दोष आठ मद, आठ मूढ़ता त्रय हैं।
अनायतन छह ये सब मिलकर, दोष पच्चीस कहे हैं।।
इनसे विरहित आठ अंग युत, सम्यग्दरस जजूँ मैं।
आप्त, जिनागम, नवपदार्थ की, श्रद्धा उसे भजूँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्व-अमलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिज्ञान के तीन शतक, छत्तीस भेद माने हैं।
द्वादश अंग चतुर्दश पूरब, श्रुतज्ञान जाने हैं।।
अवधि तीन विध मन पर्यय दो, केवल ज्ञान अकेला।
जलगंधादिक से पूजूँ मैं, होवे ज्ञान उजेला।।७।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञान अमलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांच महाव्रत पांच समिति, त्रयगुप्ति गुणों से उज्ज्वल।
सम्यक् चारित ध्यान सिद्धि, करने वाला परमोज्ज्वल।।
'इसके बिना मुक्ति नहीं मिलती, अतः इसे नित पूजूँ।
सम्यक् चारित्र प्राप्त मुझे हो, भव भव दुख से छूटूँ।।८।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्चारित्रामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—रोला छंद —

ज्ञानावरणी कर्म, पञ्च प्रकृति संयुत हैं।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिनप्रभु हैं।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
पूर्णज्ञान परकाश, करके निजपद पाऊँ।।९।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मदर्शनावर्ण, नवप्रकृति युत जानो।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन मानो।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
पूर्ण दरस गुण पाय, करके निजपद पाऊँ।।१०।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वेदनी नाम, सात असात द्विभेदा।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन देखा।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
अव्याबाध सुसौख्य, पाकर निज पद पाऊँ।।११।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनी कर्म प्रचण्ड, अट्ठाइस भेदों युत।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन हैं इक।।
जल गंधादि मिलाय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
समकित गुण को पाय, फेर न भव में आऊँ।।१२।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीयकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव प्रिय आयूकर्म, चार भेद युत वर्णा।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन शर्णा।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
अवगाहन गुण पाय, नहीं पुनर्भव पाऊँ।।१३।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म जग ख्यात, तिरानवे भेदों युत।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिनवर नित।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
गुण सूक्ष्मत्व सुपाय, चहुँ गति भ्रमण मिटाऊँ।।१४।।

ॐ ह्रीं नामकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म विख्यात, ऊँच नीच भेदों से।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन होते।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
अगुरुलघू गुण पाय, निजपद में रम जाऊँ।।१५।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय है कर्म, पांच प्रकृति को धरता।
उस निर्मूलन हेतु, दयाकांत जिन अर्चा।।
जल गंधादिक लेय, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
शक्ति अनंती पाय, शाश्वत निज सुख पाऊँ।।१६।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—गीताछन्द –पूर्णार्घ्य —

दर्शन सुज्ञान चरित्र धारक, पाँच परमेष्ठी कहे।
वे लीन स्वयं स्वभाव में, त्रैलोक्य की पूजा लहें।।
निज कर्म आठों नाश हेतु, मैं उन्हीं को पूजहूँ।
पूर्णार्घ अर्पण कर अभी, भव भव दुखों से छूटहूँ।।१७।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिपददायक-दर्शनज्ञानचारित्रकारककर्माष्टकवारक श्रीशांतिनाथाय षोडशांग द्वितीयवलयमध्ये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा..........

अथ तृतीयवलयमध्ये द्वात्रिंशत्कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सद्भक्ति वश हो इंद्र सब, निज निज गृहों से आइये।
सब देव देवी परिकरों युत, जिनभवन में आइये।।
सम्यक्त्व दर्शन सिद्ध हेतू, पूजिये जिन नाथ को।
करिये उपासन विधि सतत, जिनधर्म वत्सल आप हो।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीद्वात्रिंशत् देवेन्द्राः आगच्छत आगच्छत, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चालछंद–

परिवार सभी साथ ले, असुरेन्द्र आवते।
वे अष्ट द्रव्य से जजें, गुणकीर्ति गावते।।
वे शांति सद्गुणैक हेतु, पूजते सदा।
मैं पूजहूँ स्वशांति हेतु, आपको मुदा।।१।।

ॐ ह्रीं श्री असुरेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सभी साथ ले, धरणेंद्र आवते।
वे अष्ट द्रव्य से जजें, जिन कीर्ति गावते।।
वे शांति सद्गुणैक हेतु, अर्चते यहाँ।
हम भी जजें शांतीश को, स्वशांति हित यहाँ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री धरणेंद्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सभी साथ ले, सुपर्ण इंद्र भी।
आते हैं अष्टद्रव्य ले, अर्चा करें सभी।।
वे शांतिसद्गुणैकहेतु, पूजते यहाँ।
मैं भी जजूँ स्वशांतिहेतु, आपको यहाँ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपर्णेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार देव साथ ले, द्वीपेन्द्र आ रहे।
सुअष्टद्रव्य लेय, नाथ पूजते रहें।।
वे शांति सद्गुणों के लिए, अर्चते सदा।
मैं भी स्वशांति हेतु करूँ, अर्चना मुदा।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीद्वीपेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधीकुमार इन्द्र, स्वपरिवार ले सभी।
आकर के अष्टद्रव्य से, अर्चा करें सभी।।
वे शांति सद्गुणों के लिए, भक्ति नित करें।
हम भी स्वशांति हेतु नाथ! अर्चना करें।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीउदधीन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सभी ले, स्तनित इन्द्र आवते।
जिननाथ जजें अष्टद्रव्य, दिव्य लावते।।
वे शांति सद्गुणैकहेतु, अर्चना करें।
हम भी स्वशांतिहेतु नाथ, अर्चना करें।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीस्तनितेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत्कुमार इन्द्र, स्वपरिवार साथ ले।
अर्चा करें सुअष्टद्रव्य, लाय के भले।।
वे शांति सद्गुणों के लिए, पूजते सदा।
हम भी करें अर्चा, स्व शान्ति हेतु सर्वदा।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सभी लेय, दिक्कुमार इन्द्र भी।
अर्चा करें सुअष्टद्रव्य, लेय नाथ की।।
वे शान्ति सद्गुणों के लिए, नित्य अर्चते।
हम भी स्वशान्ति हेतु नाथ, पाद चर्चते।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीदिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नीकुमार इन्द्र, स्वपरिवार साथ ले।
नीरादि अष्टद्रव्य से, जिन पूजते भले।।
निज शान्ति सद्गुणों की सिद्धि हेतु अर्चते।
हम भी निजैक शान्ति हेतु, पाद वंदते।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीअग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायूकुमार इन्द्र, स्वपरिवार साथ ले।
नीरादि अष्टद्रव्य से, जिन अर्चते भले।।
निज शान्ति सद्गुणों कि प्राप्ति, हेतु अर्चना।
हम भी करें शांतीश की, पादाब्ज वंदना।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीवायुकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नर सुरों के इन्द्र, स्वपरिवार लावते।
पूजा करें नीरादि, अष्टद्रव्य लायके।।
निजशान्तिगुण के हेतु नाथ, पाद अर्चना।
मैं भी करूँ पूजा विधी हो, दुःख रंचना।।११।।

ॐ ह्रीं श्रीकिन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार साथ लेय, किंपुरुष के इन्द्र भी।
पूजा करें सुअष्टद्रव्य, लाय के सभी।।
निज शान्तिगुण के हेतु, शान्तिनाथ को जजें।
हम भी उन्हें पूजें सदा, परमार्थ को भजें।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीकिंपुरुषेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित महोरग, सुरों के इन्द्र भी।
अर्चें सदैव अष्टद्रव्य, लाय के सभी।।
निज शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को भजें।
हम भी उन्हें निजात्म शांति, के लिए जजें।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधर्व सुरों के अधिप, परिवार को लिये।
आकर के अष्टद्रव्य से, अर्चाविधी किये।।
निज शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी उन्हें पूजें निजात्म, सौख्य को भजें।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीगंधर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेन्द्र देव देवियों को, साथ लावते।
वसुद्रव्य से जजें जिनेंद्र, भक्ति भाव से।।
निज शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को भजें।
हम भी उन्हें पूजें, अपूर्व आत्मरस चखें।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीयक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षससुरों के इंद्र, स्वपरिवार को लिये।
नीरादिद्रव्य से जिनेश, अर्चना किये।।
वे शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को भजें।
हम भी जिनेंद्रपाद चर्च, शांति को भजें।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीराक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित भूत सुरों, के अधिप यहाँ।
पूजें जिनेंद्र पादपद्म, भक्ति से यहाँ।।
वे शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी जिनेंद्रपाद, भक्तिभाव से भजें।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीभूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित देव, पिशाचों के इंद्र भी।
सुअष्टद्रव्य लेय नाथ, पूजते सभी।।
वे शांतिगुण के हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी जिनेशपादपद्म, नित्य ही भजें।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीपिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष सुरों के इंद्र, स्वपरिवार साथ ले।
नीरादि से पूजें जिनेश, मन कुमुद खिले।।
वे शांति सद्गुणों के लिए, शांतिनाथ को।
अर्चें सदा हम भी जजें, जिननाथ आप को।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रेण स्वपरिवारसहितेनपादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित सूर्य इंद्र, जिनभवन आके।
नीरादि से पूजें अपूर्व, भक्ति बढ़ाके।।
वे शांति गुण के हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को अर्च के, निजात्म सुख भजें।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रीभास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र साथ में, परिवार लावते।
पूजा करें नीरादि से, गुणगान गावते।।
वे शांति सौख्य हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को अर्च के, निजात्म सुख भजें।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीसौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इंद्र देव देवियों, सहित यहाँ।
आकर के अष्ट द्रव्य से, अर्चा करे यहाँ।।
वे शांति सौख्य हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को पूजते, निजात्म रस चखें।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रीईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत्कुमार इंद्र, स्वपरिवार को लेके।
पूजन करें जलगंध आदि, द्रव्य संजोके।।
वे शांति सौख्य हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को अर्चते, सम्यक्त्व निधि लभें।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीसनत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र सुरपति निजी, परिवार साथ में।
आकर के अष्टद्रव्य से, पूजन करें नमें।।
वे पूर्ण शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को पूजते, संपूर्णसुख भजें।।२४।।

ॐ ह्रीं श्रीमाहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मेन्द्र देव देवियों के, साथ में आते।
पूजा करें नीरादि से, बहु पुण्य कमाते।।
वे पूर्ण शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को अर्चते, दुःख शोक से बचें।।२५।।

ॐ ह्रीं श्रीब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित लांतवेन्द्र, भक्ति से आते।
जल आदि से पूजा करें, गुणगान भी गाते।।
वे पूर्ण शांति हेतु, शांतिनाथ को भजे।
हम भी उन्हें पूजें, अनंत दुःख से बचें।।२६।।

ॐ ह्रीं श्रीलान्तवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवार सहित शुक्र इंद्र, स्वर्ग से आते।
नीरादि से पूजें अपूर्व, पुण्य बढ़ाते।।
वे पूर्ण शांति हेतु, शांतिनाथ को भजें।
हम भी प्रभू को पूजते, रोगादि से छुटें।।२७।।

ॐ ह्रीं श्रीशुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतार इंद्र देव देवियों, के साथ में।
आके जजें जिनदेव की, पूजा करे नमें।।
वे पूर्ण शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को पूजते, दुःख शोक से बचें।।२८।।

ॐ ह्रीं श्रीशतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत सुरेंद्र देव देवियों, सहित आते।
नीरादि अष्टद्रव्य से, पूजें सुयश गाते।।
अत्यन्त शांति हेतु, शांतिनाथ को भजें।
हम भी प्रभू को पूजते, अनंत सुख भजें।।२९।।

ॐ ह्रीं श्रीआनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणत सुरेन्द्र अपना, परिवार साथ ले।
नीरादिद्रव्य से जजें, संपूर्ण सुर मिलें।।
अत्यन्त शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी उन्हें पूजें, अखंड संपदा भजें।।३०।।

ॐ ह्रीं श्रीप्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरण सुरेन्द्र देव, देवियों के साथ में।
पूजें जलादि द्रव्य से, नर्तन करें नमें।।
अत्यन्त शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी उन्हें अर्चें, अपूर्व शांति को भजें।।३१।।

ॐ ह्रीं श्रीआरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युत स्वरग के सुरपती, परिवार समेता।
नीरादि द्रव्य से जजें, आनंद समेता।।
अत्यन्त शांति हेतु, शांतिनाथ को जजें।
हम भी प्रभू को अर्चते, सम्यक्त्व सुख भजें।।३२।।

ॐ ह्रीं श्रीअच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छंद-पूर्णार्घ्य—

भवनवासि व्यन्तर ज्योतिष, वैमानिक सुर के सुरपति।
बत्तिस माने हैं ये सब, निज वैभव परिकर संयुत।।
इस पूजाविधि में सब आवो, अर्हत् भक्ति बढ़ावो।
प्रमुदित मन हम तुम्हें बुलावे, धर्मप्रेम दरसावो।।३३।।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजित श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा-पूर्णार्घं—

जो जो भी सुर देवता, जहाँ जहाँ भी होय।
इस जिन उत्सव यज्ञ में, आवो हर्षित होय।।३४।।

ॐ ह्रीं सकलदेवताआराधित श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा...........

अथ चतुर्थवलये चतुःषष्टिकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

-गीता छंद-

मन में हुए दुर्भाव उनसे, पाप बहु संचित हुए।
उनके उदय में आवते, बहु रोग मुझको दुख दिये।।
तुम पाद पूजन से सभी वे, विघ्न क्षण में शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारंबार हो।।१।।

ॐ ह्रीं मानसिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

बहु अप्रशस्त वचन उचारे, पाप बहु अर्जित किये।
वे जब उदय में आवते, बहु व्याधि मुझको दुख दिये।।
तुम पादपूजन से सभी वे, विघ्नक्षण में शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारंबार हो।।२।।

ॐ ह्रीं वाचनिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

बहु अशुभ चेष्टा काय की कर, पाप बहु संचित किये।
वे जब उदय में आवते, बहु व्याधि मुझको दुख दिये।।
तुम पाद अर्चा के किए वे, विघ्न क्षण में शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।३।।

ॐ ह्रीं कायिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

नगरादि से औ राज्य या, गृह से व धन से च्युत हुए।
उसके निमित से कष्ट बहुविधि, दुःख मुझको दे रहे।।

तुम पाद पूजन से सभी वे, विघ्न क्षण में शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु, तुमको नित्य बारम्बार हो।।४।।

ॐ ह्रीं निजराजलक्ष्मीपुरराज्यगेहपदभ्रष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जो पूर्व में अर्जित किये, बहु पाप उनके उदय से।
नाना तरह के विपद दारिद, कष्ट बहु देते मुझे।।
तुम पाद पूजन से सभी वे, विघ्न संकट शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।५।।

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

बहुविध जलोदर कुष्ट श्लेष्मा, पित्त वायू रोग हैं।
उनके हुए से वेदना, तन में उठे बहु खेद हैं।।
तुम पाद पंकज अर्चते, सब व्याधि संकट शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।६।।

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्टगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फोटकादि उपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जब इष्ट का वीयोग और, अनिष्ट का संयोग हो।
तब मानसिक बहु वेदना, होवे असह संताप हो।।
तुम पाद अर्चन से सभी दुख, शोक क्षण में शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।७।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

होवे उपद्रव स्वजन का या, परजनों का भी कभी।
उसके निमित्त से शोक संकट, कष्ट देते हैं सभी।।
तुम पादपंकेरुह जजें सब, विघ्न विपदा शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।८।।

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

तीनों जगत में बहु तरह के, शस्त्र आयुध बन रहें।
बहु शत्रुगण उन शस्त्र से, बहु त्रास मुझको यदि करें।।
तुम पाद सरसिज अर्चते, सब विघ्न बाधा शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।९।।

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जलचर मगर मच्छादि नाना, जंतु पीड़ा दें यदी।
उनके निमित्त से कष्ट होवे, प्राण भी हरते कभी।।
तुम चरण अम्बुज सेवते, सब आपदायें शान्त हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१०।।

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

वन पर्वतों के चतुष्पद गज, सिंह व्याघ्रादिक सभी।
मुझको सतायें प्राणघातक, कष्टकारी हों कभी।।
तुम पादपंकज पूजते, क्षण एक में वे शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।११।।

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदादि (श्वाष्टापदादि) उपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भूपर चलें आकाश में, उड़ते पतत्री[1] बहु विधे।
वे पूर्वभव के वैर से भी, कष्ट दें मुझको अबे।।
तुम पादपंकेरुह जजें वे, विघ्न संकट शांत हो।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१२।।

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

सर्पादि के विष अन्य विष, या जो हलाहल विष कहें।
वे यदि स्वतनु में व्याप्त हों, फिर मृत्यु का भी भय रहे।।
तुम पाद अर्चन से सभी विध, विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१३।।

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

१. पक्षी।

नख सींग पैने औ बड़े, जिनके भयंकर दिख रहें।
वे जंतु पूरब वैर से यदि, कष्ट मुझको दे रहें।।
तुम पदकमल के पूजते सब, विघ्न आपद शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हों।।१४।।

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जिनके भयंकर दाढ़ हैं, या चोंच या कांटे घने।
उन क्रूर प्राणी के उपद्रव, कष्ट दें मुझको घने।।
तुम पदकमल के अर्चते वे, सर्व बाधा शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१५।।

ॐ ह्रीं चंचुतुंडदाढकंटकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

अति उग्र दावानल अगनि, आकाश तक ऊँची उठे।
उसके निमित से यदि मुझे, संताप संकट हो अबे।।
तुम पदकमल के पूजते सब, विघ्न आपद् शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१६।।

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

कल्पांत काल समान वायू प्रलयकारी जब चले।
उसके निमित से काय को, बहु कष्ट पीड़ा भी मिले।।
तुम पदसरोरुह अर्चते सब, विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१७।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डपवनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

सागर नदी में नाव आदिक, डूबने से यदि मुझे।
तिरना नहीं आवे वहाँ औ, प्राण संकट में फँसे।।
तुम पदसरोरुह अर्चते सब, विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको नित्य बारम्बार हो।।१८।।

ॐ ह्रीं नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भूपर वनों में पर्वतों पर, कष्ट भयप्रद हों कभी।
उनके निमित्त से मानसिक, कायिक व्यथा होवे तभी।।
तुम पदकमल को पूजते सब, विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।१९।।

ॐ ह्रीं वननगमेदिनीभयंकरोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

नदि कूप सरवर बावड़ी, ह्रद में उपद्रव हो जभी।
उस काल में तनु में भयंकर, व्याधि संकट हो सभी।।
तुम पाद पंकज पूजते सब, विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२०।।

ॐ ह्रीं नदीसरोवरअब्धिकूपह्रदोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

घन घोर वर्षा हो रही, बिजली पड़े अशनी[१] गिरे।
उस काल में भयभीत जन, बहु संकटों से यदि घिरें।।
तुम पाद पंकज ध्यावते, सब विघ्न संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२१।।

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमाम्बुवृष्टिउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

संग्राम में शत्रू निकट हो, बहुत शस्त्र प्रहार हों।
उस समय जन भयभीत कष्टों, से घिरे दुर्वार हों।।
तुम पाद पंकज अर्चते सब, विघ्न संकट शान्त हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२२।।

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भूत व्यंतर शाकिनी, डाकिनि पिशाचों के किये।
उपसर्ग हों नाना तरह तब, जन व्यथित होंवे हिये।।
तुम पाद पंकज पूजते, उपसर्ग सब विध शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२३।।

ॐ ह्रीं शाकिनीडाकिनीभूतप्रेतपिशाचादिभयनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

---
१. वज्र।

मोहन व स्तंभन व उच्चाटन प्रयोग अनेक हैं।
ये दुष्ट विद्यायें कदाचित्, पर निमित दुःख देत हैं।।
तुम पाद पंकज पूजते सब, विघ्न बाधा शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२४।।

ॐ ह्रीं मोहनस्तम्भनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

यदि दुष्ट ग्रह होवें कुपित, अति तीव्र पीड़ा दे रहें।
उस काल में दुःख से व्यथित, जन अन्य की शरणा गहें।।
तुम पाद पंकज यदि जजें, जब विघ्न बाधा शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२५।।

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहादिउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

मजबूत सांकल आदि से, चारों तरफ से बांध के।
पीड़ित करें यदि दुष्ट जन, तब कष्ट कैसे सह सकें।।
तुम पाद पंकज पूजते सब, दुःख उपद्रव शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२६।।

ॐ ह्रीं शृंखलादिउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

यदि आयु थोड़ी हो तभी, दुःख शोक होवे चित्त में।
अथवा मरण संभावना होवे, कभी भि अकाल में।।
तुम पद जजे अल्पायु औ, अपमृत्यु संकट शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२७।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

अतिवृष्टि या नहिं वृष्टि हो, दुर्भिक्ष से जन हों दुःखी।
खेती न हो नहिं जल मिले, तब कष्ट हो सबको अती।।
तुम पाद पंकज अर्चते, यह सब उपद्रव शांत हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२८।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

उद्यम करें भी लाभ नहिं, अथवा न उद्यम हो सके।
व्यापार या आजीविका, कैसे चले यह दुख बसे।।
तुम पाद पंकज अर्चते सब, विघ्न संकट शान्त हों।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।२९।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

निज बंधु ही यदि शत्रुसम, अपकार नितप्रति कर रहे।
उसके निमित से मानसिक, बहुताप तन मन को दहे।।
तुम पाद पंकज पूजते सब, कुछ उपद्रव शान्त हो।
श्री शांतिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।३०।।

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भार्या न हो या पुत्र पौत्रादिक, न हों कुलदीपसम।
नहिं वंश चल सकता तभी, चिंता सतावे रात दिन।।
तुम पाद पंकज पूजते ये, सब उपद्रव शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।३१।।

ॐ ह्रीं अकुटुम्बोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

कुछ पूर्व संचित पाप का, जब हो उदय तब सत्य ही।
रहते हुए गुण भी कोई, अपयश उचारें व्यर्थ ही।।
तुम पाद पंकज पूजते, अपयश उपद्रव शान्त हों।
श्री शान्तिनाथ नमोस्तु तुमको, नित्य बारम्बार हो।।३२।।

ॐ ह्रीं अपकीर्तिउपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

–शंभु छंद–

जो अखिल विश्व का हित करने में, कुशल मुक्ति के हेतू हैं।
'अर्हन्' यह नाम धरे सुंदर, सोलहवें तीर्थंकर प्रभु हैं।।
जो पंचम चक्रवर्ति मानें, बारहवें कामदेव सुंदर।
ऐसे श्री शांतिनाथ जिन की मैं, पूजा करता हूँ चितधर।।३३।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जो सुखसमुद्र कैवल्य बोध, युत सब जग को युगपत जानें।
चिंतित वस्तू सब देने में, चिंतामणि उत्तम जग मानें।।
तीर्थंकर चक्री कामदेव, इन तीनों पद से शोभित हैं।
उन शांतीश्वर की पूजा कर, हम मन में अतिशय प्रमुदित हैं।।३४।।

ॐ ह्रीं चिंतामणिसमानचिंतितफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जो अनुपम कल्पवृक्ष जग में, बिन मांगे उत्तम फल देते।
आश्रितजन के सब ताप हरें, बहुविध के उनको सुख देते।।
तीर्थंकर, चक्रवर्ति, मनसिज[१], तीनों पद के धारी मानें।
हम उनकी पूजन कर करके, दुख दारिद शोक सभी हाने।।३५।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितअर्थफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जिनका बस नाम स्मरण किये, सम्पूर्ण मनोरथ फलते हैं।
इसलिए जिन्हें विद्वान् सभी बस, 'कामधेनु' शुभ कहते हैं।।
तीर्थंकर पद चक्रीपद औ, मनसिज पद के पाने वाले।
उनकी हम अर्चा करते हैं, जिससे सम्यक्त्व निधी पालें।।३६।।

ॐ ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्णफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जो श्रेष्ठ महात्मा धर्म धुरा, धरते हैं धर्मधुरंधर हैं।
योगीश्वर भी जिनकी इच्छा, करने में संतत तत्पर हैं।।
तीर्थंकर चक्रवर्ति वैभव, औ सुन्दरता में कामदेव।
उन शांतिनाथ की पूजा से, फलते सब वांछित फल स्वमेव।।३७।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानबाधारहितअवद्यबोधपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

तीनों लोकों के सर्व जीव, के नेत्रों को आनन्द करें।
ऐसा सुन्दर अनुपम शरीर, जिस सम नहिं कोई देह धरें।।
जिनका प्राकृतिक रूप सुन्दर, सब जग में विस्मयकारी हैं।
उन शांतिनाथ को नित पूजूँ, वे सर्वोत्तम गुणधारी हैं।।३८।।

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

---

१. कामदेव।

जिनके तन की सौगंध एक, जिसके समान नहिं सुरभि कहीं।
नहिं चंदन में नहिं कमलों में, वैसी सुगंधि नहिं हुई कहीं।।
इंद्रादि देव जिनका संतत, स्मरण किया ही करते हैं।
उन शांति जिनेश्वर की हम भी, बहु बार अर्चना करते हैं।।३९।।

ॐ ह्री सुगन्धशरीरपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भविजन कमलों को आल्हादित, करके पवित्र करने वाला।
भामंडल भास्करवत् सबके, भव सात दिखा देने वाला।।
त्रिभुवन के प्राणी के नेत्रों को, हर्षित बहु करने वाला।
ऐसे जिनपद को पूजूँ मैं, जिससे हो अंतर उजियाला।।४०।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथआल्हादकारकपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

क्षीरोदधि या शशि किरणों सम, उज्ज्वल गुण अमृत पिंडसदृश।
तीनों लोकों को पूर्ण करें, जो कहें अनंतानंत अवधि।।
सुरगण मिलकर बहुभक्ति युक्त, प्रभु के गुणमणि को गाते हैं।
जो पूजा करते वे भविजन, निज की गुण संपत्ति पाते हैं।।४१।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलगुणगणसहितपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

बुद्धि में ऐसी हो विशुद्धि, जिससे सब तत्वों को जाने।
उसके प्रतिपादन करने में, सब गुरुओं के गुरु सरधाने।।
वाचस्पति को भी लज्जित कर, वृद्धिंगत बुद्धी के स्वामी।
श्री शांतिनाथ मेरी रक्षा, करिये मैं पूजूँ सुखदानी।।४२।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

नवनिधियाँ चौदह रत्न मिलें, ऐसा चक्री का पद जग में।
सुर नर खग चरणों में प्रणमें, जिन पूजा का यह फल सच में।।
जो भक्ती से जिनराज भजें, वे छह खंडाधिप होते हैं।
हम भी शांतीश्वर को पूजें, सब ईप्सित पूरे होते हैं।।४३।।

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

लक्ष्मी भी जिसके चरण कमल, की दासी बनकर रहती है।
जो सुन्दरता में रति समान, गुण से कुल भूषित करती है।।
जो जिनवर की स्तुति करते, उनको ऐसी भार्या मिलती।
हम भी शांतीश्वर को पूजें, जिससे शिवतिय भी मिल सकती।।४४।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासनसूर्यांशुसमाचरणप्रतिष्ठितगुणमंडित अत्यन्त-सुन्दराकृति पुत्रवन्तिगेहमण्डनपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जिन पूजन संस्तव वंदन औ, शुभ दान चार विध होते हैं।
श्रावक के सद्व्रत जो माने, वे विरले को ही होते हैं।।
गृह में रहकर व्रत पालन की, बुद्धि जिन भक्ति से मिलती।
इससे मैं भी अर्चन करता, जिससे शिव पथ में रुचि बढ़ती।।४५।।

ॐ ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जब शरद काल में चन्द्रकला, सोलह भी पूर्ण हुई दिखती।
सबको आल्हादित करती है, चाँदनी सभी जग में छिटकी।।
इस सम उज्ज्वल कीर्ती फैले, जो शांतिनाथ अर्चन करते।
हम भी जिनपद की पूजा कर निज कर्म कलंक सभी हरते।।४६।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

श्रेयांस सदृश हों दानवीर, अधिकारी राजा बनते हैं।
धनपति के सदृश कोश को पा, बहु पुण्य संपदा लभते हैं।।
देवाधिदेव के पूजन का, यह फल कुबेरपद मिलता है।
हम भी पूजें वसु द्रव्य लिये, निजवैभव की बस इच्छा है।।४७।।

ॐ ह्रीं गर्वरहितपरमलक्ष्मीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

तिर्यंचगती औ नरकगती, इनमें नहिं गमन स्वप्न में भी।
जो जिनपद की पूजा करते, नरगति सुरगति को लभते ही।।
फिर परंपरा से पंचम गति, यह ही जिनपूजा का फल है।
हम भी पूजें श्री शांतिचरण, मिल जावे नरभव का फल है।।४८।।

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंचगतिरहितनरसुरगतिसहितपदफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

-कुसुमलता छन्द-

पृथ्वी पर दुर्लभ से दुर्लभ, तीर्थंकर पद श्रेष्ठ महान् ।
जिससे तीन लोक के ऊपर, तिलक रूप होते अमलान।
उस पद हेतु सोलह कारण, पुण्य भावनाएं जगमान।
श्री जिन पूजन के प्रसाद से, उन्हें मनुज पाते सुखदान।।४९।।

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

भूपर दुर्लभ तीर्थंकर पद, जिससे उनकी जननी मान्य।
अति प्रशस्त सोलह स्वप्नों को, देखें पुत्र पुण्य अमलान।।
जिन पूजन से जिन जननी पद, प्राप्त करें इन्द्रों से पूज्य।
त्रिभुवन के गुरु को प्रसवित कर, परम्परा शिव लहें अपूर्व।।५०।।

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यएकजननीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

तीर्थंकर पद दुर्लभ जग में, जन्मोत्सव शत इन्द्र करें।
मेरु सुदर्शन पर ले जाकर, पयघट से अभिषेक करें।।
संख्यातीत देव देवी मिल, जन्म महोत्सव करते हैं।
जिन पूजा के फल से ही नर, तीर्थंकर पद लभते हैं।।५१।।

ॐ ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

सुख अनंत को देने वाली, सिद्धों की साक्षी पूर्वक।
ऐसी दीक्षा तीर्थंकर ही, लेने के अधिकारी एक।।
अर्हंतों के पूजन से ही, भव्यों को ऐसा सौभाग्य।
मिल जाता है अतः भक्ति से, मैं भी पूजूँ मन में धार्य।।५२।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षिदीक्षाकारिभवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, उत्तम मोक्ष प्रदायक जान।
जिनशासन के आश्रित जो जन, उनको ऐसा तनु सुख दान।।
जिनपद पंकेरुह पूजा से, मुक्ति हेतु जो साधन मान्य।
वे सब स्वयं भव्य को मिलते, जिससे शीघ्र मिले निर्वाण।।५३।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जिन आगम में सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र प्रधान।
पंचम यथाख्यात चारितमय, ये ही परिणमते मुनिमान्य।।
जिन पद पूजन करने वाले, ऐसी शक्ति पाते नव्य।
जिससे रत्नत्रय पूर्ती कर, वर लेते मुक्तिश्री सत्य।।५४।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

स्वात्मध्यान पीयूष स्वाद बिन, चिदानंद नहिं होता प्राप्त।
जिनवर कथित धर्म आश्रय से, होता अद्भुत आत्म विकास।।
चिच्चैतन्य तत्त्व का ही जो, ज्ञान प्राप्त कर लेते भव्य।
वे ही स्वात्म सुधारस पीते, जो जिन चरण कमल के भक्त।।५५।।

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

समवसरण जिनवर का अनुपम, वहाँ पहुँच जाते हैं भव्य।
धर्मामृत को कर्ण पुटों से, पीते हैं जो अतिशय नव्य।।
जिन पूजा के ही प्रसाद से, समवसरण का दर्शन शक्य।
अतः भक्ति से शांतिनाथ के, चरणकमल को पूजो भव्य।।५६।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

-सखी छंद-

दिव्यध्वनि अहर्निशा में, खिरती है चार दफा[1] में।
जिन पूजन से यह शक्ती, अतएव करो नित भक्ती।।५७।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

आठों कर्मों से विरहित, गुण आठों से ही समन्वित।
इस रूप निरंजन पद है, जिन पूजक लहे तुरत हैं।।५८।।

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जिन चरण कमल का दर्शन, आनंदित कर देता मन।
वैसे आनंद प्रदायक, गुण निधि को मैं पूजूँ नत।।५९।।

ॐ ह्रीं मनोनंदकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

१. बार।

वचनों को आनन्द कर हैं, जिनगुण का पठन श्रवण ये।
वैसे ही आनन्द दायक, जिनपद पूजूँ गुणनायक।।६०।।
ॐ ह्रीं वचनानन्दकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

तुम जातरूप के धारी, देखत तन को सुखकारी।
वैसे ही आनन्ददाता, जिनराज जजूँ हो साता।।६१।।
ॐ ह्रीं कायानन्दकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

मन से स्मरण करें जो, उसका फल अर्थ लहें वो।
शान्तिप्रभु पूजा फल से, धन हो विस्मय क्या इससे।।६२।।
ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धिसाधनकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

वचनों से संस्तव करते, हो कामवर्ग फल उससे।
जो करें शांति प्रभु अर्चा, हो काम सिद्धि विस्मय क्या।।६३।।
ॐ ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

जो तन से पूजन करते, उसका फल शिवपद लभते।
श्री शान्तिनाथ अर्चा से, विस्मय क्या मुक्ति मिले से।।६४।।
ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

-शंभु छंद-

चौंसठ कोठे से संयुत है, यह वलय चतुर्थ कहा जाता।
उनमें स्थित देवाधिदेव, उन सबकी पूजा सुख दाता।।
मैं पूरण अर्घ बना करके, श्री शांतिनाथ को जजता हूँ।
पूरी होवे मम अभिलाषा, इस हेतु वंदना करता हूँ।।६५।।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानांगाय श्रीशांतिनाथाय जलादि........।

दोहा- **कोठे इक सौ बीस में, गुणमणि शान्तिजिनेश।**
पूर्ण अर्घ से मैं जजूँ, विघ्न शान्ति के हेतु।।६६।।
ॐ ह्रीं शतैकविंशतिअंगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र बिन जीव को, शरण नहीं है अन्य।
भवदधि डूबे के लिए, पूजा नाव समान।।६७।।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय जगत्शान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।
(जातिपुष्प या लवंग से १०८ जाप करें।)

अथ जयमाला

दोहा— **चक्रवर्ति जो पांचवे, द्वादश रतिपति ईस।**
सोलहवें तीर्थेश वे, नमूँ सतत शांतीश।।१।।

(चाल–हे दीनबन्धु......)

जय शान्तिनाथ! भवदधी से भव्य को तारें।
जय शान्तिनाथ! भविजनों के कर्म विदारें।।
जय शान्तिनाथ! भाक्तिकों के विघ्न निवारें।
जय शान्तिनाथ! सर्व मोह शत्रु प्रहारें।।२।।

जय शान्तिनाथ! श्रेष्ठ सद्‌गुणों को धरे हैं।
जय शान्तिनाथ! सर्व के मंगल को करे हैं।।
जय शान्तिनाथ! भविजनों का हित विचारते।
जय शान्तिनाथ! कामदेव मल्ल मारते।।३।।

जय शान्तिनाथ! सर्व पाप खंडना करें।
जय शान्तिनाथ! सर्व सौख्य मंडना करें।।
जय शान्तिनाथ! ज्ञानसूर्य जगत् प्रकाशें।
जय शान्तिनाथ! चन्द्रभविक नेत्र विकासें।।४।।

जय शान्तिनाथ! मुक्ति के साधन त्रिलोक में।
जय शान्तिनाथ! सुगति के साधन त्रिलोक में।।
जय शान्तिनाथ! कुगति में जाने से रोकते।
जय शान्तिनाथ! दुःखनाश सौख्य पोषते।।५।।

जय शान्तिनाथ! मातृ सदृश जगत् के लिए।
जय शान्तिनाथ! परमपिता हैं भुवन त्रये।।
जय शान्तिनाथ! परम श्रेष्ठ बुद्धि के धनी।
जय शान्तिनाथ! प्राणियों के हित करें धुनी।।६।।

जय शान्तिनाथ! सर्व रोग शोक को हरें।
जय शान्तिनाथ! भक्त को संपत्ति सुख भरें।।
जय शान्तिनाथ! भवि को मोक्ष सौख्य दे रहें।
जय शान्तिनाथ! भव्य के भव भय को हर रहें।।७।।

जय शान्तिनाथ! वादियों का मानमद हरें।
जय शान्तिनाथ! गुण गणों की वृद्धि को करें।।
जय शांतिनाथ! भूत औ पिशाच भय हरें।
जय शांतिनाथ! चोर लुटेरों के भय हरें।।८।।

जय शान्तिनाथ! ग्रहों की बाधा को अपहरें।
जय शान्तिनाथ! सर्प आदि जंतु भय हरें।।
जय शान्तिनाथ! भव्यकमल हेतु सूर्य हो।
जय शान्तिनाथ! चिदानंद कारि आप हो।।९।।

दोहा— **आत्यंतिक शान्ति मिले, ''ज्ञानमती'' हो पूर्ण।**
शान्तिनाथ की अर्चना, करे सौख्य संपूर्ण।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—**कर्माश्रित कृत पाप जो, उनके क्षालन हेतु।**
शान्तिधारा मैं करूँ, श्री जिनपद पंकेज।।११।।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलि।

हिन्दी विधानकर्त्री की प्रशस्ति

शान्तिदास वर्णीरचित, संस्कृत शान्ति विधान।
भाषा में अनुवादमय , रचना रची महान् ।।१।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, षट् शुक्ला वैशाख।
दशमी तिथि कैवल्य दिन, वीरप्रभू का ख्यात।।२।।

ज्ञानमती मैं आर्यिका, पूर्ण किया यह काव्य।
शान्तिनाथ की भक्तिवश, केवल यह पुरुषार्थ।।३।।

विधिवत् शान्तिविधान यह, करो करावो भव्य।
सर्वव्याधि दुःख दूर कर, फल पावो नित्य नव्य।।४।।

जब तक श्री जिन धर्म यह, जग में करे प्रकाश।
तब तक शान्तिविधान यह, लहे भव्य मन वास।।५।।

इति श्री शांतिनाथ विधान सम्पूर्णः।

मूल ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति

दिगम्बर जैन धर्म में श्रीमूलसंघ है, उसमें सरस्वती गच्छ और बलात्कार गण हैं, उसमें श्री कुंदकुंदाम्नाय नाम से मुनिवंश प्रसिद्ध है।।१।।

उस कुंदकुंदाम्नाय में चारों वेद-चारों अनुयोगरूपी समुद्र के पारंगत सकलश्रुत के ज्ञाता पद्मनन्दी मुनीन्द्र हुए हैं। उनके पट्ट पर श्रुतसमुद्र के ज्ञानी शुद्धिसिद्धान्त के वक्ता शक्तिकीर्ति आचार्य हुए। उनके सिंहासन पर अर्थात् पट्ट पर भव्यों को सम्बोधन करने वाले ऐसे कमलचन्द्र मुनि हुए। उनके पट्ट पर भव्यों के बांधव, सभी जन का हित करने वाले ऐसे लक्ष्मीचंद्र मुनिन्द्र हुए।।२।।

उनके पट्ट पर प्रसिद्ध विद्यानंदी महायति हुए। उनके शिष्य शीलवान् मल्लिभूषण नाम के योगी हुए।।३।।

उनके पट्ट पर दिग्दिगंत में कीर्ति फैलाने वाले ऐसे लक्ष्मीचंद्र मुनि हुए। ये अहीर देश के मुल्हेपुर में हुए हैं।।४।।

इनके पट्ट पर जितेन्द्रिय दयावान् दिगंबर श्रीदयाचंद मुनि हुए हैं। जो कि स्वात्म के ध्याता, महाज्ञानी और पंचेंद्रियों के विषयों में अनासक्त थे।।५।।

उनके पट्ट पर सकलकीर्ति महामुनि हुए। जो मुनियों के स्वामी, सम्पूर्ण विद्वानों में मान्य थे, कवित्व गुण से सहित थे और सभी भव्य जनों को सुख देने वाले थे।।६।।

उनके शिष्य जिनदास ने परमादर से गुरु की सेवा भक्ति करके गुरु की विशेष कृपा प्राप्त की थी।।७।।

उस गुरुकृपा के प्रभाव से सभी तरफ के विद्वान लोग उन्हें बहुत मानते थे। उन्होंने संस्कृत आदि में पुराण रचे और भाषा में रास आदि लिखे।।८।।

उनका शिष्य मैं ''शांतिदास'' नाम से हुआ हूँ, मैं मन्दबुद्धि हूँ, मात्र बालक हूँ, छन्द, पिंगल, व्याकरण और धातुरूप आदि का भी मुझे ज्ञान नहीं है।।९।।

मैं शांतिदास नाम से प्रसिद्ध था, बुद्धिहीन था। अतः सभा में सत्कवि और पटुमति विद्वान मेरी बार-बार हँसी किया करते थे।।१०।।

उनकी हँसी को सुनकर मैंने एक बार अपने गुरु के पास में इस बात का निवेदन किया तब ब्रह्मचारी जिनदास ने मुझे आश्वासन दिया।।११।।

गुरु के द्वारा आश्वासन को प्राप्त कर मैंने जिनभक्ति से प्रेरित हो पूजा बनाई। उनमे सन्धि, स्वर, अक्षर और रेफ से रहित कविताएँ थीं।।१२।।

गुरुदेव महाज्ञानी थे, नाना सूत्रों के ज्ञाता थे उन्होंने मेरी कविता को देखकर उसका संशोधन किया।।१३।।

जो कवियों में उत्तम कवि होते हैं वे दोषयुक्त कविता को भी निर्दोष कर देते हैं। उन जिनदास गुरु ने शिष्य की परीक्षा के लिए किसी वर्ण का शोधन (निष्कासन) नहीं किया।।१४।।

इस पूजा विधान के रचने में मैंने पहले श्री शांतिनाथ की आराधना की पुनः गुरु की आराधना की है जिससे ही यह कृति पूर्ण हुई है। अतः शान्तिनाथ भगवान् और गुरु के प्रसाद से ही यह रचना बनी है। मैं तो निमित्तमात्र हूँ।।१५।।

श्री पूज्यपाद महामुनि कृत शान्तिभक्ति स्तोत्र है और श्रुतसागर कृत अष्टक है। पं. आशाधर की उक्ति का ग्रहण करके मैंने प्रथमान्त कर दिया है।।१६।।

अपराजितमंत्र से पीठिका पवित्र की गई और कुन्दकुन्द आदि गुरु परम्परा के नाम से पवित्र प्रशस्ति है।।१७।।

जो एकाग्रचित्त होकर इस विधान को पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं या सुनते हैं अथवा लिखाते हैं (मुद्रित करते हैं) वे सभी इस विधान के उत्तम फल को प्राप्त कर लेते हैं।।१८।।

यह पूजा विधान कृति पूर्ण हुई है किन्तु सर्व सामग्री से रहित है। एक सामग्री ही इसमें परिपूर्ण है वह मात्र 'जिन' नाम के इन दो अक्षर वाली ही है।।१९।।

यह शांतिनाथ महापूजा विधान, सर्व विघ्न पीड़ा आदि को नष्ट करने वाला है, सर्व कल्याण, भद्र और मंगल को देने वाला है इसमें संशय नहीं है।।२०।।

जब तक चन्द्र, मेरु आदि विद्यमान हैं, जिनागम में दयाधर्म विद्यमान है तब तक यह शान्तिनाथ जिनपूजा इस पृथ्वीतल पर चिरकाल तक समृद्धि को प्राप्त होती रहे।।२१।।

आरती श्री शांतिनाथ भगवान की

-आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ सोलहवें जिन की, आरति करो रे।।टेक.।।
प्रभु आरति से सब जन का, मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है।
भव भव के कल्मष धुलकर, सम्यक्त्व उजाला आता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की, आरति करो रे।।१।।

प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर, नरकों में भी शांति मिली।
ऐरा देवी के आंगन में, आनन्द की इक लहर चली।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
जय विश्वसेन के प्रिय नन्दन की, आरति करो रे।।२।।

शांतिनाथ निज चक्ररत्न से, षट्खंडाधिपती बने।।
इस वैभव में शांति न लख कर, रत्नत्रय के धनी बने।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ पंचम चक्री की, आरति करो रे।।३।।

जो प्रभु के दरबार में आता, इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर, 'चंदनामती' शिव पाता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मुक्तिश्री के अधिनायक प्रभु की, आरति करो रे।

भजन

-आर्यिका चंदनामती

नाम तिहारा तारनहारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्मे हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।१।।

पृथ्वी के सुन्दर परमाणु, सब तुझमें ही समा गये।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गये।।
इसीलिए तुम सम सुन्दर, नहिं कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।२।।

मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज ''चन्दनामती'' प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।
तू कितना........।।३।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा..........

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-२
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग................।।१।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-२
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग..................।।२।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-२
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग..................।।३।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-कभी तू छलिया लगता है..........

कभी टी.वी. में दिखती हैं, कभी सी.डी. में दिखती हैं।
कभी ग्रंथों में इनकी प्यारी-प्यारी मूरत दिखती है।।
जय ज्ञानमती माता, जय ज्ञानमती माता, जय ज्ञानमती माता,
जय जय ज्ञानमती माता।

बालब्रह्मचारिणी प्रथम, इस युग की तुम हो माता।
ग्रंथों की रचयित्री पहली, तुम ही हो जगमाता।।
तुम ही हो जगमाता।
है जम्बूद्वीप तेरी पहली निर्माण कृती।
तुमसे विकसित होती हैं, तीर्थंकर की धरती।।कभी.।।१।।

रागी जीवों को विराग की घूंटी सदा पिलातीं।
समय-समय पर संस्कृति की, रक्षा का पाठ पढ़ातीं।।
रक्षा का पाठ पढ़ातीं।
भगवान बनाती हैं, गुणवान बनाती हैं।
भूले भटके मानव को, इंसान बनाती हैं।।कभी.।।२।।

हीरक जन्मजयंती लेकर शरदपूर्णिमा आई।
पूरे देश में इस अवसर पर बजने लगी बधाई।।
बजने लगी बधाई
सूरज चंदा तारे अभिनंदन करते हैं।
''चंदनामती'' हम सब तव पद में वंदन करते हैं।।
कभी टी.वी.।।३।।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा—गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
१. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री ऋषभदेव भगवान
	—श्री अजितनाथ भगवान
	—श्री अभिनंदननाथ भगवान
	—श्री सुमतिनाथ भगवान
	—श्री अनंतनाथ भगवान
२. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	—श्री संभवनाथ भगवान
३. कौशाम्बी (उ.प्र.)	—श्री पद्मप्रभु भगवान
४. वाराणसी (उ.प्र.)	—श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	—श्री पार्श्वनाथ भगवान
५. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	—श्री चन्द्रप्रभु भगवान
६. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	—श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
७. भद्रिकापुरी (भद्दिलपुर)	—श्री शीतलनाथ भगवान
८. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	—श्री श्रेयांसनाथ भगवान
९. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	—श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
१०. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	—श्री विमलनाथ भगवान
११. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री धर्मनाथ भगवान
१२. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	—श्री शांतिनाथ भगवान
	—श्री कुन्थुनाथ भगवान
	—श्री अरनाथ भगवान
१३. मिथिलापुरी	—श्री मल्लिनाथ भगवान
	—श्री नमिनाथ भगवान
१४. राजगृही (नालंदा-बिहार)	—श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
१५. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	—श्री नेमिनाथ भगवान
१६. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	—श्री महावीर भगवान

विशेष—ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

—निवेदक—

अखिल भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

अध्यक्ष —**कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप**

प्रधान कार्यालय —**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

फोन नं.-०१२३३-२८०१८४, २८०२३६